वेरग्ग-सारो

(वैराग्य सार)

मंगल आशीर्वाद :

परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती
श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज

लेखक :

आचार्य वसुनंदी मुनि

जिनशासन नायक भगवान् महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण महोत्सव पर परम पूज्य राष्ट्र हितैषी संत, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा वी. नि. सं. 2550-2551 (सन् नव. 2023-नव. 2024) को **"अहिंसकाहार वर्ष"** के रूप में उद्घोषित किया गया। इसी **"अहिंसकाहार वर्ष"** के उपलक्ष्य में प्रकाशित

कृति : वेरग्ग-सारो (वैराग्य सार)

मंगल आशीर्वाद : प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज

कृतिकार : आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

सम्पादिका : आर्यिका वर्धस्व नंदनी

संस्करण : प्रथम (सन् 2024)

प्रतियाँ : 1000

ISBN : **978-93-94199-61-3**

मूल्य : 25/- (Not for Sale)

प्रकाशक : निर्ग्रन्थ ग्रंथमाला समिति (रजि.)

प्राप्ति स्थल : C/117, बेसमेंट, सेक्टर 51, नोएडा-201301
मो. 9971548889, 8800091252

मुद्रक : मित्तल इंडस्ट्रीज़, नई दिल्ली
मो. 9312401976

Visit us @ www.acharyavasunandi.com
www.shreevasuvidya.com

संपादकीय

वैराग्यसारं दुरितापहारं, मुक्त्यङ्गनादानविधौ समर्थम्।
पापाह्ववृक्षस्य महाकुठारं, सौख्याकरं त्वं भज सर्वकालम्।।

हे भव्य! तू सदा उस श्रेष्ठ वैराग्य की उपासना कर जो पाप को दूर करने वाला है, मुक्ति स्त्री के देने में समर्थ है, पाप नामक वृक्ष के लिए कुठार है और सुख की खान है।

मनो विषयमार्गेषु मत्तद्विरदविभ्रमम्।
वैराग्यबलिना शक्यं रोद्धुं ज्ञानांकुशश्रिता।।39/122।।

—(पद्मपुराण)

विषय रूप मार्ग में मदोन्मत्त हाथी के समान भ्रमण करने वाला मन ज्ञान रूप अंकुश से सहित वैराग्य रूप बलिष्ठ पुरुष से रोका जा सकता है।

जिस प्रकार समरांगण में समर हेतु उपस्थित योद्धा कवच के माध्यम से अपनी देह की सुरक्षा करता है उसी प्रकार कर्मों से युद्ध करने हेतु योगी रूपी योद्धा तभी तपस्या में अडिग रह सकता है जब वैराग्य रूपी कवच उसने धारण किया हो। वैराग्य अर्थात् राग का विरलन। संसार-शरीर-भोगों से विरक्ति ही वैराग्य है। वैराग्य के बिना वीतरागता की प्राप्ति अशक्य है। वैराग्य के महाद्वार से निकलकर ही वीतरागता के सदन में विद्यमान सिद्धत्व के सिंहासन तक पहुँचा जा सकता है।

वीतरागता की अजेय शक्ति को आज तक कोई पराजित नहीं कर सका। वीतरागता तीनों लोकों व तीनों कालों में शाश्वत रूप से अपराजित रही है। वीतरागता केवल ग्रंथपाठी विद्वानों का वाक् विलास या हास-परिहास का विषय नहीं अपितु अध्यात्म के सर्वोच्च शिखर पर विराजित योगी के चित्त में प्रज्ज्वलित एवं प्रवर्धमान वह जीवंत परम ज्योति है जिसे आज तक विषयों की आंधी बुझाने में असमर्थ होकर उसी के चरणों में विलय को प्राप्त हो गई।

वैराग्य की लक्ष्मण रेखा खींचकर ही कर्मास्रव रूपी दैत्य का निरोध किया जा सकता है। संसारादि से विरक्त, एक निरासक्त योगी ही स्वात्मलीनता के सन्मुख हो सकता है। राग-द्वेष के कारण संसार में परिभ्रमण करते हुए जीव का मात्र वैराग्य ही रक्षक है। अर्थात् उस वैराग्य का आश्रय ले जीव परिणामों को ऋजु, निरासक्त व रागद्वेषादि की हीनता युक्त बना सकता है जो संसार चक्र को थामने का कारण है।

परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज ने मात्र 57 गाथाओं में इस **'वेरग्ग-सारो'** नामक लघुकाय ग्रंथ लिपिबद्ध किया। यद्यपि जिस प्रकार साढ़े तीन हाथ की लघुकाय भी महाव्रत धारण कर निर्वाण प्राप्त कर सकती है और 1000 धनुष की महाकाय भी नरक में पड़ सकती है। उसी प्रकार यह ग्रंथ लघुकाय अवश्य है किन्तु द्रव्यसंग्रह, इष्टोपदेश ग्रंथों के समान यह विशेषता को धारण किए है।

वैराग्य का महत्व बताते हुए आचार्य श्री ने इसमें प्रतिपादित किया है—

वेरग्गं विणा णेव, रयणत्तयं तवो परमज्झाणं।
विसयकसाय-णिवत्ती, परमविसुद्धी संभवो णो॥2॥

वैराग्य के बिना रत्नत्रय, तप और परमध्यान नहीं होता। वैराग्य के बिना विषय-कषायों की निवृत्ति और परमविशुद्धि भी संभव नहीं है।

भवछेदग-वेरग्गं, संजमकवयो रायणासगग्गी।
हेदू अप्पसंतीइ, सगप्पुवलद्धीए हु तहा॥47॥

वैराग्य संसार का छेद करने वाला, संयम का कवच, राग को नाश करने वाली अग्नि एवं आत्मशांति व स्वात्मोपलब्धि का हेतु है।

ग्रंथ की प्रत्येक गाथा वैराग्य की प्रेरक, अनुमोदक व माहात्म्य का वर्णन करने वाली है। अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य भगवन् का ज्ञान महासागर के समान अथाह है। धन्य हैं गुरुवर जो अव्याबाध रूप से ग्रंथों का लेखन कर जैन वाङ्मय को संवर्धित कर रहे हैं, उसे और अधिक सशक्त बना रहे हैं और साथ ही प्राकृतभाषा को पुनः जीवंतता दिलाने में संलग्न हैं।

यदि इस ग्रंथ के संपादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें। हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से ग्रंथाध्ययन करें। परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, राष्ट्र

हितैषी संत आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज का संयम, ज्ञान, तपादि युगों-युगों तक संवर्धित होता रहे। प्रभु से प्रार्थना है कि गुरुवर श्री को आरोग्य लाभ हो एवं वे अपने शाश्वत लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त कर सकें। परम पूज्य आचार्य गुरुवर के चरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति सहित अनंतबार नमोस्तु...नमोस्तु... नमोस्तु...।

'जैनम् जयतु शासनम्'

ॐ अर्हं नमः

आर्यिका वर्धस्वनंदनी

श्री शुभमिति आश्विन शुक्ल अष्टमी
वीर निर्वाण संवत् 2550
शुक्रवार, 11 अक्टूबर 2024
अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा, राजस्थान

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	गाथा सं.	पृ.सं.
1.	मंगलाचरण	1	1
2.	वैराग्य बिना न संभव	2-3	1
3.	संयत में वैराग्य	4	2
4.	वैराग्य बिना साधु नहीं	5-7	2
5.	वीतरागता का बीज	8	2
6.	धर्म से विरक्त-मिथ्यादृष्टि	9-10	3
7.	तत्त्वचिंतक-सम्यग्दृष्टि	11	3
8.	मोही भोगानुरक्त	12	3
9.	मोही की धारणा	13	4
10.	चतुर्विध बंध	14	4
11.	पंचपरिवर्तन	15	4
12.	मिथ्यात्व का फल	16	5
13.	सुख-प्राप्ति किसे नहीं?	17	5
14.	मोही सदा दुखी	18	5
15.	भावी परमात्मा	19	6
16.	संसार-वर्द्धक क्या	20	6
17.	संसार कब तक	21	6
18.	संसार व निर्वाण	22	6
19.	देह स्वभावतः अपवित्र	23	7
20.	शुभाशुभ देह	24-25	7

21.	देह भी पूज्य	26-27	8
22.	दीर्घ संसारी	28	8
23.	पापी कौन	29	8
24.	देह दुर्गति हेतु	30	9
25.	देह से पुण्यार्जन	31	9
26.	अशुभ निवृत्ति कैसे?	32	9
27.	भोग व उपभोग	33-34	10
28.	भोगों में अनासक्त	35	10
29.	अरिहंतों के बंध नहीं	36-37	10-11
30.	रागी के कर्मबंध अधिक	38	11
31.	कर्मबंध क्रम	39	11
32.	बंधकारण-राग	40	11
33.	रागद्वेष से भवभ्रमण	41	12
34.	वैराग्यादि का महत्व	42	12
35.	मुनि उपदेश फल	43-44	12
36.	रत्नत्रय महौषधि	45	13
37.	वैराग्य-माहात्म्य	46-47	13
38.	ग्रंथकार की लघुता	48	14
39.	अंतिम मंगलाचरण	49-52	14-15
40.	ग्रंथ-हेतु	53-54	15
41.	क्षमाभाव	55	15
42.	प्रशस्ति	56-57	16

वेरग्ग-सारो

(वैराग्य सार)

मंगलाचरण

वेरग्गं सुबीअं व, कल्लाणकारगसिवपहरुक्खस्स।
तं जेहि धारिदं वा, फलं लहिदं सव्वा णमामि॥1॥

कल्याणकारक मोक्ष-पथ रूपी वृक्ष के लिए वैराग्य बीज के समान है, वह वैराग्य जिनके द्वारा धारण किया गया अथवा जिन्होंने वैराग्य के फल को प्राप्त किया उन सभी को मैं (आचार्य वसुनंदी मुनि) नमस्कार करता हूँ।

वैराग्य बिना न संभव

वेरग्गं विणा णेव, रयणत्तयं तवो परमज्झाणं।
विसय-कसाय-णिवत्ती, परमविसुद्धी संभवो णो॥2॥

वैराग्य के बिना रत्नत्रय, तप और परमध्यान नहीं होता। वैराग्य के बिना विषय-कषायों की निवृत्ति और परमविशुद्धि भी संभव नहीं है।

इदं णरदेहं लहिय, कुणिदुं संजमं तवं सज्झाणं।
वेरग्गं विणा को वि, कया वि कत्थ वि समत्थो णो॥3॥

इस मानव देह को प्राप्त कर वैराग्य के बिना कोई भी संयम, तप व सद्ध्यान करने में कहीं भी कदापि समर्थ नहीं होता।

संयत में वैराग्य

सुगंधोव्व पुप्फेसुं, तिलेसु तिल्लं व कट्ठे अग्गीव।
तहा खीरे सप्पीव, संजदम्मि सया वेरग्गं॥4॥

जिस प्रकार पुष्पों में सुगंध, तिल में तेल, काष्ठ में अग्नि और दुग्ध में घी होता है उसी प्रकार संयमी में सदैव वैराग्य होता है।

वैराग्य बिना साधु नहीं

सिप्पीए विणा मुत्ता, विसं जलं विणा विसहरो मेहो।
विणा उण्हत्त-मग्गी, सीयलत्तं विणा मिअंगो॥5॥

केवलणाणेण विणा, सव्वण्हुत्तं वीयरायत्तेण।
विणा अरिहावत्था हु, विहिणासं विणा सिद्धत्तं॥6॥

बीयेण विणा रुक्खो, जह रयणेहि विणा रयणायरो य।
चेयणं विणा जीवो, तह वेरग्गं विणा साहू॥7॥ (तिअं)

जिस प्रकार सीप के बिना मोती, विष के बिना विषधर, जल के बिना मेघ, ऊष्णता के बिना अग्नि, शीतलता के बिना चंद्रमा, केवलज्ञान के बिना सर्वज्ञता, वीतरागता के बिना अरिहंतावस्था, कर्मनाश के बिना सिद्धत्व, बीज के बिना वृक्ष, रत्नों के बिना रत्नाकर और चेतना के बिना जीव (संभव नहीं) होता है उसी प्रकार वैराग्य के बिना साधु (नहीं) होता है।

वीतरागता का बीज

जह बीअं सुदणाणं, केवलणाण-केवलदंसणाणं।
तह बीअं वेरग्गं, वीयरायत्त-सिद्धत्ताण॥8॥

जैसे केवलदर्शन व केवलज्ञान के लिए श्रुतज्ञान बीज होता है उसी प्रकार वीतरागता और सिद्धत्व के लिए वैराग्य बीज होता है।

धर्म से विरक्त-मिथ्यादृष्टि

मिच्छादिट्ठि-विरत्तो, होज्ज धम्मादो सम्मसद्धाए।
सण्णाणादो वद-तव-सज्झाणादीदो वि तहेव॥9॥

मिथ्यादृष्टि जीव धर्म, सम्यक् श्रद्धा, सम्यग्ज्ञान और उसी प्रकार व्रत, तप, सद्ध्यान आदि से भी विरक्त होता है।

तिव्व-मंद-भावेहिं, रज्जदि मिच्छो विसयकसायेसुं।
ण कया वि रयणत्तये, णो हिदत्थं पुण्णकज्जेसु॥10॥

मिथ्यादृष्टि जीव तीव्र वा मंद भावों से विषय-कषायों में रंजायमान होता है। वह स्वात्महित के लिए कदापि पुण्यकार्यों वा रत्नत्रय में अनुरक्त नहीं होता।

तत्त्वचिंतक-सम्यग्दृष्टि

सम्मादिट्ठी रज्जदि, अप्पहिदयर-णिमित्तेसु पडिसमदि।
संसार-कारणादो, कुणदि तच्चचिंतणं णिच्चं॥11॥

सम्यग्दृष्टि जीव आत्महितकर निमित्तों में रंजायमान होता है, संसार के कारणों से विरक्त होता है और नित्य तत्त्वचिंतन करता है।

मोही भोगानुरक्त

भवतणभोयणुरायं, कुव्वेदि मोहबलेण अण्णाणी।
सद्दिट्ठी दु विरत्तो, पावादु मोहुवसमत्तादु॥12।

मोह के बल से अज्ञानी जीव संसार, शरीर, भोगों में अनुराग करता है जबकि सम्यग्दृष्टि जीव मोह के उपशम होने से पापों से विरक्त होता है।

मोही की धारणा

सुहस्स धारणा भवे, देहे सुद्धीइ होदि मोहादो।
भोगेसु सस्सद-सुहं, मण्णेदि हु दिग्घसंसारी॥13॥

संसार में सुख की और देह में शुद्धि की धारणा मोह से ही होती है। दीर्घ-संसारी जीव ही भोगों में शाश्वत सुख मानता है।

चतुर्विध बंध

चउविहकम्मं बंधदि, मिच्छत्ताइ-पच्चयेहि सकम्मो।
पइडि-पदेस-अणुभाग-ठिदि-बंधो जोग-कसायेहि।14॥

कर्म से युक्त जीव मिथ्यात्वादि प्रत्ययों से चार प्रकार के कर्मों को बांधता है। योग व कषाय से प्रकृति, प्रदेश, अनुभाग व स्थिति बंध होता है। अर्थात् योग से प्रकृति व प्रदेश एवं कषाय से अनुभाग व स्थिति बंध होता है।

पंचपरिवर्तन

दव्व-खेत्त-याल-भाव-भव-भेयादु पणविहो संसारो।
कुणंति मोहवसेणं, पंच-परिवट्टणं जीवा दु॥15॥

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव के भेद से संसार पाँच प्रकार का होता है। मोह के वशीभूत होकर जीव पंच परावर्तन करते हैं।

मिथ्यात्व का फल

मिच्छत्ताइबलेणं, भमदे संसारे बंधिय कम्मं।
भवसायरे पडदि पुण, जीवो पावेदि तिव्वदुहं॥16॥

मिथ्यात्वादि के बल से जीव कर्मों का बंध कर संसार में परिभ्रमण करता है वह बार-बार संसार सागर में पतित होता है और तीव्र दु:ख प्राप्त करता है।

सुख-प्राप्ति किसे नहीं?

अजीवम्मि चेयणा व, असंभवो गगणम्मि मुत्तत्तं व।
राइल्लणणाणीहिं, संसारम्मि सुहसंपत्ती॥17॥

जिस प्रकार अजीव में चेतना और आकाश में मूर्तत्व असंभव है उसी प्रकार रागी व अज्ञानी जीवों के द्वारा संसार में सुख की प्राप्ति असंभव है।

मोही सदा दु:खी

केवलीसुं मोहोव्व, णिगोदजीवेसु तसणामुदयोव्व।
संसारे णो मोही, पावदि जहत्थ-सुहं कयावि॥18॥

जिस प्रकार केवलियों में मोह और निगोदिया जीव में त्रस नामकर्म का उदय नहीं होता उसी प्रकार संसार में मोही जीव कदापि यथार्थ सुख को प्राप्त नहीं करते।

भावी परमात्मा

संसाराद‍ु विरत्ता, वियारिय भव-जहत्थ-सरूवं जे।
होज्ज भावि-परमप्पा, लहंति ते सिवपदं णियमा॥19॥

संसार के यथार्थ स्वरूप का चिंतन कर जो संसार से विरक्त होते हैं वे भावी परमात्मा हैं, नियम से मोक्षपद को प्राप्त करते हैं।

संसार-वर्द्धक क्या

हिंसाइ-पंच-पावं, मोहजणिद-असंजम-रूववत्ती।
संसार-संवड्ढगा, गहिदागहिदं मिच्छत्तं च॥20॥

गृहीत व अगृहीत मिथ्यात्व, हिंसादि पाँच पाप और मोह से उत्पन्न असंयम रूप प्रवृत्ति नियम से संसार-वर्द्धक होती है।

संसार कब तक

जस्स मणे भवरायं, हस्सदि वड्ढदि जावदु मोहादो।
तावदु संसारो भव-रायं विणा णो भवभमणं॥21॥

जब तक मोह से मन में संसार के प्रति राग घटता व बढ़ता है तब तक संसार है। क्योंकि संसार के राग के बिना संसार में परिभ्रमण नहीं होता।

संसार व निर्वाण

अप्पा चिय संसारो, रायदेसजुदो भमदि भवविविणे।
अप्पा खलु णिव्वाणं, तहा कम्मकद्दम-विहीणो॥22॥

रागद्वेष से युक्त आत्मा ही संसार है, वही संसार वन में परिभ्रमण करती है तथा कर्म रूपी पंक से रहित आत्मा ही निर्वाण है।

देह स्वभावतः अपवित्र

सीलादु देह-असुई, णिम्मिदो असुह-पोग्गलखंधेहिं।
असुहेहिं परिवड्ढदि, असुहखंधुप्पायगो हि तहा॥23॥

स्वभावतः यह शरीर अपवित्र है। यह अशुभ पुद्गल स्कंधों से निर्मित है, अशुभ पुद्गल स्कंधों से वृद्धिंगत होता है तथा अशुभ पुद्गल स्कंध ही उत्पन्न करता है।

शुभाशुभ देह

पवित्तत्था अवि असुह-देहं फासित्तु होज्ज अपवित्ता।
इह देहे सुइ-वत्थुं, ण कया वि दिस्सदि णाणीहिं॥24॥

अशुभ देह का स्पर्श करके पवित्र पदार्थ भी अपवित्र हो जाते हैं। ज्ञानियों को इस देह में कोई पवित्र वस्तु कदापि दिखाई नहीं देती।

धादुवधादुमयोरालियदेहो हु असुहो सामण्णस्स।
वरसुर-महापुरिसाण, णिम्मिद-देहो सुहखंधेहि॥25॥

सामान्य जन की धातु व उपधातुमय औदारिक देह अशुभ होती है जबकि श्रेष्ठ देव व महापुरुषों की देह शुभ पुद्गल स्कंधों से निर्मित होती है।

देह भी पूज्य

रयणत्तय-जोगेणं, असुहदेहो वि पुण्णरूव-पुज्जो।
सिवहेदू णरदेहो, णेव संभवो विणा पुण्णं॥26॥

रत्नत्रय के योग से यह अशुभ देह भी पूर्ण रूप से पूज्य हो जाती है। पुण्य के बिना मोक्ष की हेतु यह मानव देह प्राप्त होना संभव नहीं है।

जेण देहेण जीवो, गच्छेदुं मोक्खमग्गं समत्थो।
सव्वकम्मं खयेदुं, सो वि पुज्जो णर-सुरिंदेहि॥27॥

जिस देह से जीव सर्व कर्मों के क्षय के लिए मोक्षमार्ग पर गमन करने में समर्थ होता है वह देह भी नर-सुर-इंद्रों के द्व ारा पूज्य है।

दीर्घसंसारी

फास-रसण-घाण-चक्खु-कण्णिंदिय-विसयेसु अणुरत्ता दु।
भोय-णिमग्गा जे ते, कहं णाणि-अप्पसंसारी॥28॥

जो स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु व कर्णेन्द्रिय के विषयों में अनुरक्त हैं, भोगों में निमग्न हैं वे ज्ञानी और अल्पसंसारी कैसे हो सकते हैं? अर्थात् विषयों में अनुरक्त और भोगों में निमग्न जीव दीर्घसंसारी होता है।

पापी कौन

देहेण कुणदि पावं, कसायपोसणं विसयसेवणं च।
सुधम्मं सत्थं गुरुं, णिब्भच्छेदि जो पावी सो॥29॥

जो देह से पाप करता है, कषायों का पोषण, विषयों का सेवन और सद्धर्म, शास्त्र व गुरुओं का अपमान करता है, वह पापी है।

देह दुर्गति हेतु

कुणदि सवर-अहिदं पर-पीडं जीवघादं कुणंतो णो।
कुमग्गे गमणं तस्स, देहो अवि दुग्गदि-हेदू य॥30॥

जो दूसरों को पीड़ा देता हुआ, जीवघात करता हुआ व कुमार्ग पर गमन करता हुआ स्वपर का अहित करता है उसकी देह भी दुर्गति की हेतु है।

देह से पुण्यार्जन

देहेण पुण्णज्जणं, तित्थवंदण-गुरुसेवा-पूयाहि।
दाणादीहि संभवो, जव-सील-वदाइ-पालणादु॥31॥

तीर्थवंदना, गुरुसेवा, पूजा व दान आदि से तथा जप, शील व व्रतादि के पालन से देह के द्वारा पुण्यार्जन संभव है।

अशुभ निवृत्ति कैसे?

अहिंसाइ-वद-पालण-मिरियाइ-पंचसमिदीणं जवं च।
इंदियणिरोहं तवं, करेज्जा असुह-णिवत्तीए॥32॥

अशुभ से निवृत्ति के लिए अहिंसादि व्रत व ईर्यादि पाँच समितियों का पालन, इंद्रिय निरोध, जप व तप करना चाहिए।

भोग व उपभोग

इगवारो भोयजोग्ग-पदत्था भवे णादव्वा भोया।
वारंवारं हु भोय-जोग्गा सव्वदा उवभोया॥33॥

संसार में एक बार भोगने के योग्य पदार्थ भोग एवं बार-बार भोगने के योग्य पदार्थ उपभोग कहलाते हैं।

तंबोल-मसणं गंध-सुमहारादी चंदणाइ-लेवो।
लोयम्मि भोग्ग-वत्थुं, ण चेयणस्स सुहदा कया वि॥34॥

पान, भोजन, गंध, पुष्पमाला, चंदनादि का उबटन आदि लोक में भोगने योग्य वस्तु हैं, ये चेतन को सुख प्रदान करने वाली कदापि नहीं हैं।

भोगों में अनासक्त

सम्मादिट्ठी जीवा, भोग्गपदत्था चिय पभुंजंता वि।
णेव तेसु अणुरत्ता, जहत्थसहावजाणगा जं॥35॥

सम्यग्दृष्टि जीव भोग्य पदार्थों को भोगते हुए भी उनमें अनुरक्त नहीं होते क्योंकि वे द्रव्य व यथार्थ स्वभाव को जानते हैं।

अरिहंतों के बंध नहीं

वीदरायि-जिणदेवो, खइय-भोयं भुंजंतो सहाए।
पुप्फाइ-विट्ठीए दु, णेव बंधेदि जडिल-कम्मं॥36॥

धर्मसभा-समवसरण में पुष्पवृष्टि आदि के द्वारा क्षायिक भोगों को भोगते हुए भी वीतरागी जिनेंद्रदेव जटिल कर्मों का बंध नहीं करते हैं।

समवसरणे विज्जंत-वसुमहापाडिहेराइ-विहूदिं।
उवजुंजंत-जिणिंदो, ण बंधदि भववड्ढगकम्मं॥37॥

समवसरण में विद्यमान अष्ट महाप्रातिहार्यादि विभूति का उपयोग करते हुए जिनेन्द्र देव संसारवर्द्धक कर्मों का बंध नहीं करते।

रागी के कर्मबंध अधिक

विरागी पभुंजंतो, इंदिय-विसया ण तावइय-कम्मं।
बंधदि मिच्छादिट्ठी, जावइयं तिव्वरायेणं॥38॥

वैरागी जीव इंद्रिय विषयों को भोगता हुआ भी उतने कर्मों का बंध नहीं करता जितने कर्मों का बंध मिथ्यादृष्टि जीव तीव्र राग से विषयों का भोग करते हुए करता है।

कर्मबंध क्रम

अविरद-सम्मादिट्ठी, अणुव्वदि-महव्वदी अप्पमत्ता।
कमसो हीणरूवेण, बंधंति कम्म-मजोगो णो॥39॥

अविरत सम्यग्दृष्टि अणुव्रती, महाव्रती, अप्रमत्त जीव क्रमशः हीन रूप से कर्मों का बंध करते हैं। अयोगकेवली कदापि कर्मों का बंध नहीं करते।

बंध-कारण - राग

रायो बंध-कारणं, दोसो राये फुडाफुड-रूवेण।
उहयरज्जूहिं विणा, को जीवो बंधदे कम्मं॥40॥

राग बंध का कारण है। प्रकट या अप्रकट रूप से राग में द्वेष विद्यमान रहता है। राग-द्वेष रूप दोनों-रस्सियों के बिना कौन जीव कर्म का बंध कर सकता है अर्थात् कोई नहीं।

रागद्वेष से भवभ्रमण

मंथाणीए रज्जू, णच्चदि आगरिसण-विगरिसणेहिं।
रायद्दोस-बलेणं, भवघडम्मि हु जह तह जीवो॥41॥

जिस प्रकार मथानी में आकर्षण व विकर्षण से रस्सी घूमती है उसी प्रकार संसार रूपी घट में जीव राग व द्वेष के बल से परिभ्रमण करता है।

वैराग्यादि का महत्व

विराग-संजम-तवेहि, लहदि णवणीदं व अरिहंतपदं।
मिच्छादिट्ठी मेत्तं, णच्चंतो दुहरूवतक्कं॥42॥

वैराग्य, संयम व तप के द्वारा जीव मक्खन के समान अरिहंत पद तथा मिथ्यादृष्टि जीव संसार में परिभ्रमण करता हुआ मात्र दु:ख रूपी छाछ को ही प्राप्त करता है।

मुनि उपदेश फल

भिसगेणं च पदायिद-तिफलं भुंजिय णिरामयो रोयी।
वाद-पित्त-कफ-रहिदो, जह तह मुणिवर-उवदेसेण॥43॥

भवदेहभोयविरत्त-रूव-तिफला-भुंजणेण जीवस्स।
जम्म-जरा-मिच्चु-रूव-रोयं हसदि खयदि कमेणं॥44॥ (जुम्मं)

जैसे वैद्य द्वारा दिये गए हरड़, बहेड़ा, आँवला रूप त्रिफला को खाकर रोगी, वात-पित्त व कफ से रहित निरोगी हो जाता है उसी प्रकार मुनिराज के उपदेश से संसार-शरीर-भोग विरक्त रूप त्रिफला को खाने से जीव के जन्म, जरा, मृत्यु रूपी रोग क्रम से ह्रास को प्राप्त हो जाते हैं वा नष्ट हो जाते हैं।

रत्नत्रय महौषधि

जिणवर-सुदमुणिभत्ती, तिफला व्व कुणिदु णिरामय-मप्पं।
रयणत्तयं णियमेण, कम्मं खयिदु महोसहीव॥45॥

जिनेन्द्रदेव, श्रुत व निर्ग्रन्थ मुनियों की भक्ति आत्मा को निरोगी करने के लिए त्रिफला के समान है। कर्म क्षय के लिए रत्नत्रय नियम से महा औषधि के समान है।

वैराग्य-माहात्म्य

वेरग्ग-सारभूदं, इह परलोए सुहकरं जीवाण।
सिवपहो धम्मपाणो, हेदू संवर-णिज्जराणं॥46॥

वैराग्य सारभूत है, इहलोक व परलोक में जीवों का सुख करने वाला, मोक्ष का मार्ग, धर्म का प्राण एवं संवर व निर्जरा का हेतु है।

भवच्छेदग-वेरग्गं, संजम-कवयो रायणासगग्गी।
हेदू अप्पसंतीइ, सगप्पुवलद्धीए हु तहा॥47॥

वैराग्य संसार का छेद करने वाला, संयम का कवच, राग को नाश करने वाली अग्नि एवं आत्मशांति व स्वात्मोपलब्धि का हेतु है।

ग्रंथकार की लघुता

मुत्ता व अक्ककरेहि, सोहदि णीरंबिंदू उप्पलम्मि।
जिणगीइ गुरुकिवाए, सक्को हं गंथं लहेदुं।।48।।

जिस प्रकार सूर्य की किरणों से जल की बूंद कमल पर सुशोभित होती है उसी प्रकार जिनवाणी और गुरुकृपा से मैं (आचार्य वसुनंदी मुनि) इस ग्रंथ का लेखन करने में समर्थ हुआ।

अंतिम-मंगलाचरण

चरिय-चक्किं जुगपुरिस-पढमाइरियं दक्खिणभारदस्स।
महाधीर-संतिसिंधु-मुवसग्ग-विजेदुं पणमामि।।49।।

चारित्र चक्रवर्ती, युगपुरुष, महाधीर, उपसर्ग विजेता, दक्षिण भारत के प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी मुनिराज को मैं प्रणाम करता हूँ।

महातवस्सिं च पायसायरं संघणायगं मणुण्णं।
अज्झप्पजोगि-सूरिं, जयकित्तिं वंदे भत्तीइ।।50।।

मनोज्ञ, महातपस्वी, संघनायक आचार्य श्री पायसागर जी व अध्यात्मयोगी आचार्य श्री जयकीर्ति जी मुनिराज की मैं भक्तिपूर्वक वंदना करता हूँ।

देसस्स महागोरव-देसभूसणं पणायार-णिउणं।
संगह-णिग्गह-कुसलं, णमामि भारदरयणसूरिं।।51।।

पंचाचार पालन में निपुण, संग्रह-निग्रह में कुशल, भारतरत्न, देश के महागौरव आचार्य श्री देशभूषण जी मुनिराज को मैं नमस्कार करता हूँ।

सिद्धंतचक्किं च सिद-पिच्छि-धारगं रट्ठसंतं।
पच्चक्ख-परमुवयारि-सूरि-विज्जाणंदं णमामि॥52॥

सिद्धांत चक्रवर्ती, श्वेतपिच्छि धारक, राष्ट्र संत प्रत्यक्ष व परमोपकारी आचार्य श्री विद्यानंद जी गुरुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ।

ग्रंथ-हेतु

पत्त-रायजुद-णंदो, भव-कारणं पोग्गल-पदत्थेहिं।
लहमि णंदं विज्जाइ, विज्जाणंदस्स णंदी हं॥53॥

पुद्गल पदार्थों से प्राप्त राग से युक्त आनंद संसार का कारण है। किन्तु श्री विद्यानंद का नंदी मैं (आचार्य वसुनंदी मुनि) विद्या के आनंद को प्राप्त करता हूँ।

सयलकम्मं खयेदुं, सुहे ठविदुं विसुद्धिं वड्ढेदुं।
असुह-णिवत्तीइ इमो, विरइदो सुदकिड्डंतेणं॥54॥

अशुभ से निवृत्ति, विशुद्धि की वृद्धि, सुख में स्थिति और संपूर्ण कर्मों के क्षय के लिए श्रुतक्रीड़ा करते हुए यह ग्रंथ लिखा गया।

क्षमाभाव

रयणत्तय-धारगा हु, सूरि-पाठग-साहू मोक्खपंथी।
बालोव्व मज्झ खमंतु, महापुरिसाण खमासीलं॥55

रत्नत्रय धारक मोक्षपंथी आचार्य, उपाध्याय व साधु बालक के समान मुझे क्षमा करें। उचित ही है महापुरुषों का स्वभाव क्षमा है।

प्रशस्ति

सग-संजम-गहण-दिणे, पणतीस-वस्स-पारब्भे लिहिदो।
मइ सूरि-वसुणंदिणा, वेरग्गसंजमभावेहिं।।56।।

अपने संयम ग्रहण के दिन पैंतीसवें संयम वर्ष के प्रारंभ में वैराग्य व संयम के भावों से मुझ आचार्य वसुनंदी के द्वारा यह ग्रंथ लिखा गया।।

णवदेव-गदि-गुरु-चेयणा-वीरब्धे पुण्णाहे पुण्णो।
हरिदठाणिंदपत्थे, सिरिपासणाहपादमूले।।57।।

नवदेवता (9), गति (4), गुरु (5), चेतना (2), ''अंकानां वामतो गतिः'' से 2549 वीरनिर्वाण संवत् में शुभ दिन में हरित स्थान (ग्रीन पार्क) इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) में श्री पार्श्वनाथ भगवान् के पादमूल में यह ग्रंथ पूर्ण हुआ।

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

रचित व संपादित साहित्य

मौलिक कृतियाँ

(प्राकृत साहित्य)			
क्र.सं.	नाम	क्र.सं.	नाम
1.	प्राकृत वाणी भाग-1	2.	प्राकृत वाणी भाग-2
3.	प्राकृत वाणी भाग-3	4.	प्राकृत वाणी भाग-4
5.	अहिंसगाहारो (अहिंसक आहार)	6.	अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
7.	अणुवेक्खा-सारो (अनुप्रेक्षा सार)	8.	जिणवर-थोत्तं (जिनवर स्तोत्र)
9.	जदि-किदि-कम्मं(यति कृतिकर्म)	10.	णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
11.	णिग्गंथ-थुदी (निर्ग्रन्थ स्तुति)	12.	तच्चसारो (तत्त्व सार)
13.	धम्म सुत्तं (धर्म सूत्र)	14.	अप्प-विहवो (आत्म वैभव)
15.	सुद्धप्पा (शुद्धात्मा)	16.	अप्पणिब्भर-भारदं (आत्मनिर्भर भारत)
17.	विज्जा-वसु-सावयायारो (विद्यावसु श्रावकाचार)	18.	रट्ठ-संति-महाजण्णो (राष्ट्र शांति महायज्ञ)
19.	अट्ठंग जोगो (अष्टांग योग)	20.	णमोयार महप्पुरो (णमोकार माहात्म्य)
21.	मूल-वण्णो (मूल वर्ण)	22.	मंगल-सुत्तं (मंगल सूत्र)
23.	विस्स-धम्मो (विश्व धर्म)	24.	विस्स-पुज्जो-दियंबरो (विश्व पूज्य दिगम्बर)
25.	समवसरण सोहा (समवसरण शोभा)	26.	वयण-पमाणत्तं (वचन प्रमाणत्व)
27.	अप्पसत्ती (आत्म शक्ति)	28.	कला-विण्णाणं (कला विज्ञान)
29.	को विवेगी (विवेकी कौन)	30.	पुण्णासव-णिलयो (पुण्यास्रव निलय)
31.	तित्थयर-णामत्थुदी (तीर्थंकर नाम स्तुति)	32.	रयणकंडो (सूक्ति कोश)
33.	धम्मस्स सुत्ति संगहो	34.	कम्म-सहावो (कर्म स्वभाव)
35.	खवगराय सिरोमणी (क्षपकराज शिरोमणि)	36.	सिरि सीयलणाह-चरियं (श्री शीतलनाथ चरित्र)
37.	अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)	38.	समणायारो (श्रमणाचार)
39.	असोग-रोहिणी-चरियं (अशोक रोहिणी चरित्र) (महाकाव्य)	40.	लोगुत्तरविट्टी (लोकोत्तर वृत्ति)
41.	समणभावो (श्रमण भाव)	42.	झाणसारो (ध्यानसार)
43.	इड्ढिसारो (ऋद्धिसार)	44.	जिणवयणसारो (जिनवचनसार)
45.	भत्तिगुच्छो (भक्ति गुच्छ)	46.	पसमभावो (प्रशम भाव)
47.	सम्मेदसिहर महप्पुरो (सम्मेदशिखर महात्म्य)	48.	अम्हाण आयवत्तो (हमारा आर्यावर्त्त)
49.	विणयसारो (विनय सार)	50.	तव-सारो (तप सार)
51.	भाव-सारो (भाव सार)	52.	दाण-सारो (दान सार)
53.	लेस्सा-सारो (लेश्या सार)	54.	वेरग्ग-सारो (वैराग्य सार)
55.	णाण-सारो (ज्ञान सार)	56.	णीदि-सारो (नीति सार)

टीका ग्रंथ			
1.	प्रमेया टीका-रत्नमाला (संस्कृत)	2.	वसुधा टीका-द्रव्यसंग्रह (संस्कृत)
3.	नय प्रबोधिनी-आलाप पद्धति (हिंदी)	4.	श्रीनंदा टीका-सिद्धिप्रिय स्तोत्र (संस्कृत)

इंग्लिश साहित्य			
1.	Inspirational Tales Part& 1&2	2.	Meethe Pravachan Part-I

वाचना साहित्य			
1.	मुक्ति का वाग्दान (इष्टोपदेश)	2.	बोधि वृक्ष (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)
3.	शिवपथ का रथ (सामायिक पाठ)	4.	स्वात्मोपलब्धि (समाधि तंत्र)
5.	श्रावकधर्म-संहिता (रत्नकरण्ड श्रावकाचार)		

प्रवचन साहित्य			
1.	आईना मेरे देश का	2.	उत्तम क्षमा धर्म (आत्मा का ए.सी. रूम)
3.	उत्तम मार्दव धर्म (मान महाविष रूप)	4.	उत्तम आर्जव धर्म (रंचक दगा बहुत दु:खदानी)
5.	उत्तम शौच धर्म (लोभ पाप का बाप बखाना)	6.	उत्तम सत्य धर्म (सतवादी जग में सुखी)
7.	उत्तम संयम धर्म (जिस बिना नहिं जिनराज सीझे)	8.	उत्तम तप धर्म (तप चाहे सुरराय)
9.	उत्तम त्याग धर्म (निज हाथ दीजे साथ लीजे)	10.	उत्तम आकिंचन धर्म (परिग्रह चिंता दु:ख ही मानो)
11.	उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म (चेतना का भोग)	12.	खुशी के आँसू
13.	खोज क्यों रोज-रोज	14.	गुरुत्तं भाग 1
15.	गुरुत्तं भाग 2	16.	गुरुत्तं भाग 3
17.	गुरुत्तं भाग 4	18.	गुरुत्तं भाग 5
19.	गुरुत्तं भाग 6	20.	गुरुत्तं भाग 7
21.	गुरुत्तं भाग 8	22.	गुरुत्तं भाग 9
23.	गुरुत्तं भाग 10	24.	गुरुत्तं भाग 11
25.	गुरुत्तं भाग 12	26.	गुरुत्तं भाग 13
27.	गुरुत्तं भाग 14	28.	गुरुत्तं भाग 15
29.	गुरुत्तं भाग 16	30.	गुरुत्तं भाग 17
31.	गुरुत्तं भाग 18	32.	चूको मत
33.	जय बजरंगबली	34.	जीवन का सहारा
35.	ठहरो! ऐसे चलो	36.	तैयारी जीत की
37.	दशामृत	38.	धर्म की महिमा
39.	ना मिटना बुरा है न पिटना	40.	नारी का धवल पक्ष
41.	शायद यही सच है	42.	श्रुत निर्झरी
43.	सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की शौर्य गाथा	44.	सीप का मोती (महावीर जयंती)
45.	स्वाती की बूँद		

हिंदी गद्य रचना

1.	अन्तर्यात्रा	2.	अच्छी बातें
3.	आज का निर्णय	4.	आ जाओ प्रकृति की गोद में
5.	आधुनिक समस्यायें प्रमाणिक समाधान	6.	आहारदान
7.	एक हजार आठ	8.	कलम पट्टी बुद्धिका
9.	गागर में सागर	10.	गुरु कृपा
11.	गुरुवर तेरा साथ	12.	जिन सिद्धांत महोदधि
13.	डॉक्टरों से मुक्ति	14.	दान के अचिन्त्य प्रभाव
15.	धर्म बोध संस्कार (भाग 1-4)	16.	धर्म संस्कार (भाग 1-2)
17.	निज अवलोकन	18.	वसु विचार
19.	वसुनन्दी उवाच	20.	मीठे प्रवचन (भाग 1)
21.	मीठे प्रवचन (भाग 2)	22.	मीठे प्रवचन (भाग 3)
23.	मीठे प्रवचन (भाग 4)	24.	मीठे प्रवचन (भाग 5)
25.	मीठे प्रवचन (भाग 6)	26.	रोहिणी व्रत कथा
27.	स्वप्न विचार	28.	सद्गुरु की सीख
29.	सफलता के सूत्र	30.	सर्वोदयी नैतिक धर्म
31.	संस्कारादित्य	32.	हमारे आदर्श

हिंदी काव्य रचना

1.	अक्षरातीत	2.	कल्याणी
3.	चैन की जिंदगी	4.	ना मैं चुप हूँ ना गाता हूँ
5.	मुक्ति दूत के मुक्तक	6.	हाइकू
7.	हीरों का खजाना	8.	सुसंस्कार वाटिका

विधान रचना

1.	कल्याण मंदिर विधान	2.	कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
3.	चौसठऋद्धि विधान	4.	णमोकार महार्चना
5.	दु:खों से मुक्ति (बृहद् सहस्रनाम महार्चना)	6.	यागमंडल विधान
7.	श्री समवशरण महार्चना	8.	श्री नंदीश्वर विधान
9.	श्री सम्मेदशिखर विधान	10.	श्री अजितनाथ विधान
11.	श्री संभवनाथ विधान	12.	श्री पद्मप्रभ विधान
13.	श्री चंद्रप्रभ विधान (देहरा तिजारा)	14.	श्री चंद्रप्रभ विधान
15.	श्री पुष्पदंत विधान	16.	श्री शांतिनाथ विधान
17.	श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान	18.	श्री नेमिनाथ विधान
19.	श्री महावीर विधान	20.	श्री जम्बूस्वामी विधान

21.	श्री भक्तामर विधान	22.	श्री सर्वतोभद्र महार्चना
23.	श्री पंचमेरू विधान	24.	लघु नंदीश्वर विधान
25.	श्री चौबीसी महार्चना	26.	अभिनव सिद्धचक्र महार्चना
27.	अभिनव सिद्धचक्र मंत्रार्चना		

संपादित कृतियाँ (संस्कृत प्राकृत साहित्य)

1.	आराधना सार (श्रीमद्देवसेनाचार्य जी)	2.	आराधना समुच्चय (श्री रविचन्द्राचार्य)
3.	आध्यात्म तरंगिणी (आचार्य सोमदेव सूरी जी)	4.	कर्म विपाक (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5.	कर्मप्रकृति (सिद्धांतचक्रवर्ती आ. श्री अभयचंद्र जी)	6.	गुणरत्नाकर (रत्नकरण्ड श्रावकाचार) (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
7.	चार श्रावकाचार संग्रह	8.	जिनकल्पि सूत्र (श्री प्रभाचंद्राचार्य जी)
9.	जिन श्रमण भारती (संकलन-भक्ति, स्तुति, ग्रंथादि)	10.	जिन सहस्रनाम स्तोत्र
11.	तत्त्वार्थ सार (श्री मदमृताचन्द्राचार्य सूरि)	12.	तत्त्वार्थस्य संसिद्धि
13.	तत्त्वार्थ सूत्र (आ. श्री उमास्वामी जी)	14.	तत्त्वज्ञान तरंगिणी (श्री मद्भट्टारक ज्ञानभूषण जी)
15.	तच्च वियारो सारो (आ. श्री वसुनंदी जी)	16.	तत्व भावना (आ. श्री अमितगति जी)
17.	धर्म रत्नाकर (श्री जयसेनाचार्य जी)	18.	धम्म रसायण (आ. श्री पद्मनंदी स्वामी जी)
19.	ध्यान सूत्राणि (श्री माघनंदी सूरी)	20.	नीतिसारसमुच्चय (आ. श्री इंद्रनंदीस्वामी जी)
21.	पंच विंशतिका (आ. श्री पद्मनंदी जी)	22.	प्रकृति समुत्कीर्तन (सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमीचंद्राचार्य जी)
23.	पंचरत्न	24.	पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (आ. श्री अमृतचंद्रस्वामी जी)
25.	मरणकण्डिका (आ. श्री अमितगति जी)	26.	भगवती आराधना (आ. श्री शिवकोटी स्वामी जी)
27.	भावत्रयफलप्रदर्शी (आ. श्री कुंथुसागर जी)	28.	मूलाचार प्रदीप (आ. श्री सकलकीर्तिस्वामी जी)
29.	योगामृत (भाग 1-2) (मुनि श्रीबाल चंद्र जी)	30.	योगसार (भाग 1, 2) (मुनि श्री बालचंद्र जी)
31.	रयणसार (आ. श्री कुंदकुंद स्वामी)		
32.	वसुऋद्धि		
*	रत्नमाला (आ. श्री शिवकोटि स्वामी जी)	*	स्वरूप संबोधन (आ. श्री अकलंक देव जी)
*	पूज्यपाद श्रावकाचार (आ. श्री पूज्यपाद जी)	*	इष्टोपदेश (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
*	लघु द्रव्य संग्रह (आ. श्री नेमीचंद्र स्वामी जी)	*	वैराग्यमणिमाला (आ. श्री विशालकीर्ति जी)
*	अर्हत् प्रवचनम् (आ. श्री प्रभाचंद्र स्वामी जी)	*	ज्ञानांकुश (आ. श्री योगीन्द्र देव)
33.	सुभाषित रत्न संदेह (आ. श्री अमितगतिस्वामी जी)	34.	सिन्दूर प्रकरण (आ. श्री सोमदेव स्वामी जी)
35.	समाधि तंत्र (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)	36.	समाधि सार (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
37.	सार समुच्चय (आ. श्री कुलभद्र स्वामी जी)	38.	विषापहार स्तोत्र (महाकवि धनंजय)

प्रथमानुयोग साहित्य

1.	अमरसेन चरित्र (कविवर माणिक्कराज जी)	2.	आराधना कथा कोश (ब्र. श्री नेमीदत्त जी) (भाग 1-2-3)

3.	करकण्डु चरित्र (मुनि श्री कनकामर जी)	4.	कोटिभट श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5.	गौतम स्वामी चारित्र (मण्डलाचार्य श्री धर्मचंद्र जी)	6.	चारूदत्त चरित्र (ब्र. श्री नेमीदत्त जी)
7.	चित्रसेन पद्मावती चरित्र (पं. पूर्णमल्ल जी)	8.	चेलना चरित्र
9.	चंद्रप्रभ चरित्र	10.	चौबीसी पुराण
11.	जिनदत्त चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)	12.	त्रिवेणी (संग्रह ग्रंथ)
13.	देशभूषण कुलभूषण चरित्र	14.	धर्मामृत (भाग 1-2) (श्री नयसेनाचार्य जी)
15.	धन्यकुमार चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)	16.	नागकुमार चरित्र (आ. श्री मल्लिषेण जी)
17.	नंगानंग कुमार चरित्र (श्रीमान् देवदत्त)	18.	प्रभंजन चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
19.	पाण्डव पुराण (श्री मदाचार्य शुभचंद्र देव)	20.	पार्श्वनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
21.	पुण्याश्रव कथा कोष (भाग 1-2) (श्री रामचंद्र मुमुक्षु)	22.	पुराण सार संग्रह (भाग 1-2) (आ. श्री दामनंदी जी)
23.	भरतेश वैभव (कवि रत्नाकर)	24.	भद्रबाहु चरित्र
25.	मल्लिनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)	26.	महीपाल चरित्र (कविवर श्री चारित्र भूषण)
27.	महापुराण (भाग 1-2)	28.	महावीर पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
29.	मौनव्रत कथा (आ. श्री श्रीचंद्र स्वामी जी)	30.	यशोधर चरित्र
31.	रामचरित्र (भाग 1-2) (आ. श्री सोमदेव स्वामी)	32.	रोहिणी व्रत कथा
33.	व्रत कथा संग्रह	34.	वरांग चरित्र (आ. श्री जटासिंह नंदी)
35.	विमलनाथ पुराण (श्री ब्रह्मचारीश्वर कृष्णदास जी)	36.	वीर वर्धमान चरित्र
37.	श्रेणिक चरित्र	38.	श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
39.	श्री जम्बूस्वामी चरित्र (श्री वीर कवि)	40.	शांतिनाथ पुराण (भाग 1-2) (कवि असग जी)
41.	सप्तव्यसन चरित्र (आ. श्री सोमकीर्ति भट्टारक)	42.	सम्यक्त्व कौमुदी
43.	सती मनोरमा	44.	सीता चरित्र (श्री दयाचंद गोलीय)
45.	सुरसुंदरी चरित्र	46.	सुलोचना चरित्र
47.	सुकुमाल चरित्र	48.	सुशीला उपन्यास
49.	सुदर्शन चरित्र (पं. गोपालदास बरैया)	50.	सुभौम चक्रवर्ती चरित्र
51.	हनुमान चरित्र	52.	क्षत्र चूड़ामणि (जीवंधर चरित्र)

संपादित हिंदी साहित्य

1. अरिष्ट निवारक त्रय विधान
   - नवग्रह विधान • वास्तु निवारण विधान • मृत्युंजय विधान (पं. आशाधर जी कृत)
2. श्री जिनसहस्रनाम एवं पंचपरमेष्ठी विधान
3. श्री जिनसहस्रनाम विधान (लघु) आदि एक नाम अनेक
4. शाश्वत शांतिनाथ ऋद्धि विधान
   - भक्तामर विधान (आ. मानतुंग स्वामी जी (मूल) • शांतिनाथ विधान (पं. ताराचंद्र जी)
   - सम्मेदशिखर विधान (पं. जवाहर दास जी)

5.	कुरल काव्य (संत तिरुवल्लुवर)	6.	तत्त्वोपदेश (छहढाला) (पं. प्रवर दौलतराम जी)
7.	दिव्य लक्ष्य (संकलन- हिंदी पाठ, स्तुति आदि)	8.	धर्म प्रश्नोत्तर (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
9.	प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (आ. श्री सकलकीर्ति जी)	10.	भक्तिसागर (चौबीसी चालीसा संग्रह)
11.	विद्यानंद उवाच (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)	12.	सुख का सागर (चौबीसी चालीसा)
13.	संसार का अंत	14.	स्वास्थ्य बोधामृत
15.	पिच्छि-कमण्डलु (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)		

गुरु पद विनयांजली साहित्य

1.	आचार्य श्री विद्यानंद जी की यम सल्लेखना (मुनि प्रज्ञानंद)	2.	अक्षर शिल्पी (मुनि शिवानंद)
3.	पगवंदन (मुनि शिवानंद प्रशमानंद)	4.	वसुनंदी प्रश्नोत्तरी (मुनि जिनानंद, ऐ. विज्ञान सागर)
5.	दृष्टि दृश्यों के पार (आ. श्री वर्धस्व नंदनी, वर्चस्व नंदनी)	6.	स्मृति पटल से भाग-1 (आ. श्री वर्धस्व नंदनी)
7.	स्मृति पटल से भाग-2 (आ. श्री वर्धस्व नंदनी)	8.	अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी (ऐलक विज्ञान सागर)
9.	गुरु आस्था (ऐलक विज्ञान सागर)	10.	परिचय के गवाक्ष में (ऐलक विज्ञान सागर)
11.	स्वर्णोदय (ऐलक विज्ञान सागर)	12.	स्वर्ण जन्मजयंती महोत्सव (ऐलक विज्ञान सागर)
13.	हस्ताक्षर (ऐलक विज्ञान सागर)	14.	वसु संबुध (महाकाव्य) (प्रो. डॉ. उदयचंद जी जैन)
15.	समझाया रविन्दु न माना (सचिन जैन 'निकुंज')		